National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 10-13
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. कृष्णा डी लमाणि,
सहायक प्राध्यापक, हिंदी अध्ययन विभाग,
क्रिस्तू जयंति (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय),
बेंगलूरु कोत्तनूरु पोस्ट, के नारायणपुर,
बेंगलूरु, कर्नाटक- 560077

Correspondence:
डॉ. कृष्णा डी लमाणि,
सहायक प्राध्यापक, हिंदी अध्ययन विभाग,
क्रिस्तू जयंति (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय),
बेंगलूरु कोत्तनूरु पोस्ट, के नारायणपुर,
बेंगलूरु, कर्नाटक- 560077

घुमंतु जनजाति – बंजारा समुदाय का लोक-साहित्य

डॉ. कृष्णा डी लमाणि

शोधसार:

एक सामाज की पहचान उसकी रहन सहन, पहनाव, खान-पान, बोली, भाषा व्यवसाय आदि होती है। हर समाज या समुदाय का अपना ही एक विशेष संस्कृति परंपरागत रूप से चली आती रहती है। बंजारा समुदाय भी अपना ही एक विशेष संस्कृति का पालन करता है। अपनी भी बोली बोलता है। इस समाज का व्यवसाय, वेषभूषा और संस्कृति का आचरण विशेषतः राजस्तान की संस्कृति से जुडा हुआ है। बंजारा समुदाय मूलतः राजस्तान से है और इनका व्यवसाय व्यापार करना है। व्यापारी होने के कारण अपने जानवरों के पीठ पर सामान लादकर पूरे विश्व में भ्रमण करते हुए दिखाई देते हैं। इसी लिए बंजारा समुदाय को घुमंतू जनजाती में गिना जाता है। घुमंतू प्रवृत्ति के होने के कारण इस स्थान को अपना जगह मान कर रहना संभव नहीं हो पाया। वे व्यापार के सिल्सिले में हर शहर और देश को घूमते समय अपना टोली को साथ में लेकर चलते थे। जिसको लदेणी कहते हैं। पूरा दिन चलते थे और रात होने पर जंगल में ही ठहरना पडता था। इस संदर्भ में औरतें खान पकाती थी और बच्चों को बूढे और आदमी लोग अपने ही भाषा में लोक-गीत लोक-कहानी या कविता या पौराणिक कथावों को सुनाते थे। साथ ही बंजारा समुदाय का पूज्य देवता सेवाभाया और मरियम्मा देवी की भी कहानी या गीत गाया करते थे। गीत गाते समय ताम्बे का घडा, ताम्बे की थाली और नगाडा जैसे सामान्य वाद्यों का इस्तेमाल करते थे। इस समुदाय का पहनाव भी विशिष्ट है। फेटौया काण्चळी, धोती आदि बंजारा समुदाय का पहचान है। जंगज-जंगल गूमने के कारण यह समुदाय सर्वहारा है। हिंदू समुदाय के हर तोहार को यह समुदाय भी बडे ही जोर दार से मनाता है। इनमें से दषहरा और दिवाली प्रमुख त्योहार है।

बीज शब्द : बंजारा, लख्की बंजारा, घुमक्कड(घुमंतु) जनजाति, लदेणी, गोरबोली, ताँडा, ढावलो, काचळी, फेटिया, सेवालाल, मरियम्मा याडी ।

मूल आलेख:

लोक-साहित्य जन जीवन का दर्पण है। इस साहित्य से समाज का रहन सहन, आचार विचार, वेष भूषा तीज़-त्योहार आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। लोक साहित्य में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का योगदान रहता है। यह मन की भावनाओं को बतानेवाला साहित्य है। अपने दुख दर्द को भूलने का जरिया है। खुशी मनाने का मार्ग है। लोक साहित्य अपनत्व के साथ अपने मन की सारी वेदनाओं को वाणि प्रदान करता है। इसी विषय पर उषा तिवारी जी कहती है – “लोक साहित्य जन जीवन का आईना है। इस दर्पण में अनपढ जनता की भावनाओं का, सुख दुख भरी विविध मनोवृत्तियों का प्रतिफलन होता है।”[1] बंजारा घुमक्कड प्रवृत्ति का समुदाय है। इस समुदाय का पहचान ही व्यापार है। बंजारा समाज का इतिहास लिखित रूप में मिलना बहुत ही कठिण है। लोक कथा और लोग गीतों में ही यह समाज बसा हुआ है इसी लिए बंजारा समाज के इतिहास और व्यवसाय के बारे में डॉ. मोतिराज राठौर कहते है – “”इस जाति का इतिहास आज लिखित रूप में उपलब्ध नहीं है, पर भारतीय

इतिहासकारों ने तथा ब्रिटिश शासकों ने इसका उल्लेख व्यापार के लिए भटकने वाली जनजाति के रूप में किया गया है ।"[2] व्यापार करते करते देश भर में घूमा करते थे । एक जगह ना टिककर रहने के कारण शिक्षा से वंचित रहे है और अपनी वाणि/साहित्य को लिखित रूप ना देकर केवल मौखिक साहित्य में ही रखा गया है । इसी कारण बंजारा समुदाय का इतिहास और केवल लोक गीत या लोग गाथा में ही मिलता हैं ।

बंजारा समुदाय व्यापार के कारण देश भर में घूमा करते थे । अपने बैल, गाय, घोडों पर माल लादकर भ्रमण किया करते थे । वे मीलों दूर पैदल चलते थे । माल पहुंचाने के रास्ते में देर हो जाए या रात हो गई तो एक जगह रुकते तो वहाँ टेंट बनाकर आराम करते और अगली सुबह का इंतजार करते । बंजारा समुह जहाँ जगह अपने समूह को रुकवाया उस जगह को 'ताँडा' कहते है । यही ताँडा आज इन बंजारा समाज के लोगों का गाँव बना हुआ है । बंजारे बडे व्यापारी थे । जब यह दल अपने बैलों के लेकर जाता है तो लगता था कि कोई एक बडी सेना जा रही है । और लोग आश्चर्य से देखा करते थे । रास्ते में आनेवाले समास्याओं से भिडने के लिए सभी तैयार रहते थे । चोर डकायतों से बचने के लिए कुच निडर और साहसी पुरुष शस्त्रों का अभ्यास भी किया करते थे । जंगलों में जाते है तो जानवरों के आक्रमण से बचने के लिए यही पराक्रमी वीर पुरुष अपने भाई बंधुओं के रक्षा के लिए तैनात रहते थे । कहा जाता है कि सत्रवीं शताब्दी में एक बंजारा वीर पुरुष लक्खीशाह नाम सुनाई देता है जो वीर एवं पराक्रमी था । तलवारबाजी और तीरबाजी में निपुण था । वह अपने समूह को किसी भी हालत में दूसरों से नुक्सान पहुँचाने के लिए नहीं देता था । इसके पराक्रम और वीरता के बारें में और ताँडा और बंजारों के व्यापार के बारे में एक प्रख्यात उर्दू कवि नजीर अकबराबादी लिखते है कि –

"तू बडा लक्खी बंजारा,
टाँडा तेरा भारी है ।
गाफिल दिल में मत रहना,
तू बहुत बडा बेपारी है॥"[3]

लोकगीतों के जरिये समाज या समुदाय के के बारे में भलीभांति समझ सकते हैं । बंजारा समुदाय का लोकगीत भी हमें बंजारा समाज के बारे में जानने के लिए सहायक होंगे । "एक समय था जब बंजारा समाज व्यापार का प्रमुख आधार हुआ करता था । मध्यकाल में राजस्थान में जो व्यापार संचार होता था उसमें बंजारों की मुख्य भूमिका थी । माल ढुलाई का कार्य ऊँट बैल घोडा खच्चर बैलगाडी आदि के माध्यम से ही किया जाता था ।"[4] इस तरह वस्तुयों को एक जगह से दूसरे जगह तग पहुंचाने की प्रक्रिया को लमाणि भाषा में 'लदेणी' कहते हैं ।

"चाली चालीर लदणी ।
भायार लदणी चाली ।
कल्याण नगरेती चालीर।।
गावडी पर गुणी लादन ।
भाया जारे दोढ मलकेन ।
चाले चालेर लदणी लादलेन।।"[5]

बंजारें रास्ते में आए हर मुसिबतों को पार कर पगडंदियों से होते हुए सामग्री को एक जगह से दूसरे जगह तक पहुंचाते थे । नदी नाले हो या घना जंगल या रेगिस्थान हर तरह के रास्तों में चलने के लिए वे तैयार रहते थे । कोई भी कैसा भी रास्ता उनके लिए मुश्किल नहीं लगता था ।

बंजारें एक जगह से दूसरे जगह सामग्री को पहुंचाकर अपनी जीवन बिताते थे । किंतु मध्यकाल में हुई वैज्ञानिक क्रांति बंजारों के व्यवसाय में बादा बन गई । जब मोटर-गाडि आदि वाहनों का आविष्कार हुआ तो उसका असर सीदा इस घुमंतु समाज पर पडा । परिणामतः बंजारा समाज अपने मूल व्यवसाय से दूर होता जाने लगा । इसका अन्य व्यवसाय की आदत ना होने के कारण बंजारा समुदाय के लोग गरिबी का शिकार होनेगे । इस कारण बंजारा समाज शहरों का चक्कर काटने लगा कुछ लोग छोटे मोटे काम ढुंडकर अपना जीवन बिता ने लगे । बंजारों पा पारंपरिक व्यवसाय बदलकर कई तरह के कामों में जुट गए। समुंदर के पास रहने वाले लवण(नमक) बेचने का काम करने लगे । जंगलों से सूखी लकडीयों का गट्टा बनाकर माथे पर लादकर गाँव शहर गूम गूम कर बेचने का काम करने लगे । कुछ परिवार अपने जानवरों के सहायता से खेती में लग गए । पशुपालन को भी व्यवसाय बना लिया और शहरों के कारखानों में काम मजदूरी करने लगे । मध्यकाल के बाद यह घुमंतु जनजाती एक जगह अपना परिवार को लेकर रहने लगा और वे अब बडे बडे ताँडा बन गया है । जहाँ जहाँ भी लोग रहते थे वही पर अपना परिवार बसा लिया । और हर ताँडा में अपने दैव पुरुष संत सेवालाल और माता मरियम्मा/मारिकाम्बा का मंदिर बना कर उनके छत्र छाया में जी रहे है । इसी लिए राजस्तान राज्य से तालुक रखने वाला बंजारा समाज केवल रजस्तान में ही नहीं बल्कि पूरे भारत में दिखायी देता है । "भारत में लगभग 2.5 करोड से अधिक बंजारा लोग गोरबोली बंजारा बोली गोरमाटि भाषा बोलते हैं।"[6] मुख्य रूप से महाराष्ट्रा, कर्नाटका, राजस्तान, तेलंगाणा, तमिळनाडु, ओडिसा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात राज्यों में बंजारों की संख्या ज्यादा है । बंजारा समाज को अलग अलग राज्यों में अलग अलग नामों से पहचाना जाता है जैसे, कर्नाटक में लम्बाणि, महाराष्ट्रा में लमाणि, आंद्रपदेश में सुगाली और तेलंगाणा में लम्बाडी नामों से संबोधित किया जाता है । भारतवर्ष के पूरे बंजारा समुदायों को लगभग 44 नामों से संबोधित किया जाता है । बंजारा लोगों को 'गोर', या गोरमाटी, भी कहा जाता है और इनकि भाषा 'गोरमाटी भाषा' कहलाती है जो राज्स्तान की मारवाडी भाषा से मेल खाति है । और यह बंजारा / गोरमाटी भाषा पूरे देश के लोगों के एक सूत्र में लाने के लिए सहायक कडी है ।

बंजारा लोग गोरमाटी भाषा में ही लोकगीतों के जरिए अपने विचार व्यक्त करते हैं । अपना सुख-दुख हर्षोल्लास आदि मन की भावनाओं को गीतों के माध्यम से व्यक्त करते हैं । बंजारा समुदाय के हर त्योहार के समय में स्त्रीयां गीत गाया करती है । जब ज्यादा खुशी और दुख होता है तो वह रोती हुई गाना गाती है । जैसे अपने घर कोई अपना परिवार वाला आता है तो उसके आगमन की खुशी को महमान के गले मिलकर रोती हुई गाती है । और जब शोक समाचार पाती है तो रोती हुई गानों के जरिए अपना दुख व्यक्त करती है । इस तरह के रोती हुई गानों को बंजारा भाषा में 'ढावलो' कहते हैं । जब भी ताँडा में कही से भी ढावलो की आवाज आती है तो आस पास के लोगों को पता चलता है आभास होता है कि कोई महमान आया होगा या कोई शोक समाचार मिला होगा । सुर इस समय आस पास के लोग उस स्त्री के पस जाकर खबर लेते है कि असल में क्या हुआ है । इस तरह भाईचारे के साथ लोग अपने ताँडा के लोगों के साथ जुडे रहते हैं ।

छोटे-छोटे गाँवों(ताँडा) में रहने के कारण बंजारा समाज के लोक साहित्य में ग्रामीण परंपरा का गंध महसूस होता है । बंजारा लोक साहित्य में छंदों का समागम बहुत ही कम मिलता है । लोग गीत सामान्य लोगों से बने हुए है तो उनमें साहित्यिक गुण-लक्षणों का गौण होना स्वाभाविक है । "अधिकतर विद्वान लोकगीत को ग्रामीण मानते हैं । उनका मानना है कि ग्रामगीत प्रकृति के उद्गार है । इसमें अलंकार नहीं रस है । छंद नहीं केवल लय है । लालित्य नहीं माधुर्य है । इनमें जीवन इठला इठलाकर लहराता है ।"[7] किंतु लोक साहित्य में समाज की परिदृश्य देखने को मिलता है । ग्रामीण लोगों के जीवन से जुडे हर बात पर लोग गीतों में जिक्र होता है । बहुतेरे रूप में पर्यावरण, ऋतु, त्योहार और सामान्य जीवन से संबंधित विश्यों का समागम इन गीतों में उपलब्ध होते हैं ।

लमाणी समुदाय के वेश-भूषा, रीति-रिवाज, कला रहन सहन आदि राजस्थानी(मारवाडी) संस्कृति के बहुत ही नजदीक है । लमाणी समुदाय का वेष-भूषा अनुखा है । सामान्यतः स्त्री आभुषण प्रिय होती है । बंजारा स्त्री भी कई तरह के आभूश्णों से अपना श्रंगार कर लेती है। भुरिया, बल्या, बाउटे, नथनी, कंगन, अंघुटी, कमरबंध आदि आभुषण स्त्री के श्रंगार में शामिल रहते है । स्त्री के वस्तों में कांचली, फेटिया, घाघरो, चुनरी, आदी सामान्य है । ये वस्त्र बंजारा समुदाय की स्त्रीयों का सांस्कृतिक वस्त्र है । इन्हीं वस्त्रों के कारण बंजारा स्त्री अन्य स्त्रीयों से अलग दिखती है । बंजारा स्त्री के वस्त्रों से जुडा एक लोग गीत को यहाँ देख सकते हैं -

"सोळ हातेरो तारो घागरोये गुजराणी
नवे हातेरो वोरो डोर्
घूमतो आव तारो घाघरोये गुजराणी
रळकती आव वोर डोर्
सोळ ट्कडीरी तारी कांचळीये गुजराणी
चळकती आव तारी कांचे ।"[8]

बंजारा "यह एक ऐसा जनजाती वर्ग है जो अपनी ययावरी के लिए प्रसिद्ध है । इनके विस्तार का भौगोलिक क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। आश्चतर्य कि बात है कि इनकी भैगोलिक सीमाओं की विस्तीर्णयता कभी बाधक नहीं रही । क्योंकि आज भी इन्होंने अपनी संस्कृति को आधुनिक समाज द्वारा पडने वाले विविध दुष्प्रभावों से बचाये रखा है। इनकी संस्कृति की गंध इनके रहन – सहन में स्पष्ट झलकती है ।"[9] अन्य समाज से संपर्क रखते हुए भी अपने संस्कृतिका आचरण को भूले नहीं है । विशेष संदर्भों में बंजारा समुदाय अपने सांस्कृतिक वेष-भूषा में दिखाई देता है । आज भी अपने सांस्कृतिक त्योहारों को अपने बंजारा समुदाय के साथ मनाता है। तीज, सितला, दसराव, गोकुलाष्टमी, दिपवली, होली आदि त्योहारों को मनाते हैं। इन त्यूहारों में अनेक गीत गाये जाते है। हर त्यूहारों के बारे में बंजारा समाज में लोक गीत मौजूद है । 'तीज' बंजारा समाज जे मनाए जाने वाला एक विशेष त्योहार है इससे संबंधित एक लोक गीत प्रस्तुत है ।-

मलाई गंगा नंदिरो झारी झळको
सीळो पाणि भरी तीजे हरी भरी रेजो ।
म लाई जमुना नंदीर झारी झळको
सीळो पाणि भरी तीजे हरी भरी रेजो ।[10]

उपसंहार:

यही साहित्य (लोक-साहित्य) बंजारा समुदाय की धरोहर है । अपने भारतीय परंपरा को समझने के लिए लोक साहित्य बहुत ही सहायक साबित होता है । प्राचीन समाज और संस्कृति को जानना है तो लोक साहित्य का अध्ययन आवश्यक है । यह केवल मात्र एक समुदाय का ही नहीं बल्कि भारतीय समाज का धरोहर है । सुरेश गौतम कहते है कि – "जो गीत संपत्ति की तरह विरासत में मिले हो, वही लोक गीत है । मौखिक परंपरा का अवगाहन करके सहजानुभूति से सम्पन्न ये लोक गीत किसी भी जाति, समुदाय, राष्ट्र की सबसे बडी पहचान है ।"[11] लिखित इतिहास या साहित्य ना होने के कारण बंजारा समुदाय को लेकर और भी कई प्रश्न बाकि है जिनकी खोज करना और उसे लिखित रूप में सग्रह करना आवश्यक है ।

वर्तमान में बंजारा समुदाय का सांप्रदायिक व्यवसाय 'लदेणी' कार्य पूर्ण रूप से समाप्त हो गया है । लदेणि आज इतिहास बन गया है । सरकार के सहयोग से शिक्षा ग्रहण कर व्यापार, व्यवसाय और विभिन्न उद्योगों में जुटा लिए है और सरकारी नौकरी पा कर भारत के समष्टीकरण में शामिल हो गए है । बंजारा समुदाय में काफी बदलाव आया है । सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव के कारण सारे समाज एक सा लगने लगे है। किंतु किसी भी विशेष समुदाय के तह तक जाने से पता चलता है कि प्रत्येक समुदाय अन्य समुदायों से विभिन्न और विशेष है । बंजारा समुदाय भी भारतीय समुदाय में एक होते हुए भी अन्य समुदायों से विशिष्ट और विशेष है । बंजारा लोक-साहित्य में इसकी अनौखेपन की पुष्टी मिलती है।

संदर्भ सूची :

1. अनुपम साहित्यिक निबंध – उषा तिवारी – पृ. सं – 270
2. बंजारा संस्कृति – डॉ मोतिराज राठौड – पृ. सं – 12
3. बंजारा जाति, समाज और संस्कृति – यशवंत जादव – पृ. सं - 04
4. बंजारा लोक साहित्य - कथा साहित्य के संदर्भ में – डॉ. चांदावत विजया – पृ. सं – 53
5. ಕ್ರಾಂತಿಯೋಗಿ ಶ್ರೀ ಸೇವಾಲಾಲ್ ಹಾಗೂ ಬುಡಕಟ್ಟು ಜನಾಂಗ - ಕೆ ಮಂಜುನಾಥ ನಾಯಕ್ – ಪು. ಸಂ – 54
6. भारत के विमुक्त एवं घुमंतु जन समुदयाय – सं. व्यंकट धारासुरे – पृ. सं – 173
7. बंजारा लोक साहित्य - कथा साहित्य के संदर्भ में – डॉ. चांदावत विजया – पृ. सं - 25
8. ಕ್ರಾಂತಿಯೋಗಿ ಶ್ರೀ ಸೇವಾಲಾಲ್ ಹಾಗೂ ಬುಡಕಟ್ಟು ಜನಾಂಗ - ಕೆ ಮಂಜುನಾಥ ನಾಯಕ್ – ಪು. ಸಂ – 145
9. बंजारा लोक साहित्य – कथा साहित्य के संदर्भ में – डॉ. चांदावत विजया – पृ. सं - 53
10. कर्नाटक के लमाणी लोक गीतों का साहित्यिक अध्ययन – एछ डी लमाणी - पृ. सं – 237
11. लोक साहित्य – डॉ. सुरेश गौतम – पृ. सं – 67